भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 28 अंक : 2 | 15.3.2005 मंगलवार (मार्च-अप्रैल) | प्रति अंक : 10.00

फागुन के दिन आयो रे....

उत्तर भारत के मुक्तों के आध्यात्मिक उत्कर्ष के युगकार्य में निमित्त बनाने प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी द्वारा चुना कोहिनूर हीरा–स्वर्णपात्र यानि– हम सब के प्राणाधार **प.पू. गुरुजी** ! प.पू. काकाजी के अंतर की प्रसन्नता का अमृत कलश अपने इस मानसपुत्र - पनौते पुत्र प.पू. गुरुजी पर ढला और हम सब बिना कोई साधन, तपस्या, व्रत, दान किए ही निरंतर बहती इस अमृत गंगा से धन्य हुए... मानो हम सब की अकल्पनीय लॉटरी लग गई !

सर्वप्रथम तो कोटि-कोटि धन्यवाद करुणा के अगाध सागर गुरुहरि योगीजी महाराज व प.पू. काकाजी महाराज को....

प.पू. गुरुजी अपनी बातों में अक्सर कहते हैं कि ***मेरे जीवन की सबसे अद्भुत घटना यह कि गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं प.पू. स्वामिजी जैसी विभूतियों का मुझे जोग मिला।*** मैं धन्य हो गया। सर्वप्रथम तो प.पू. गुरुजी द्वारा बार-बार दोहराई इस बात से हमें खूब समझने-सीखने जैसा है कि ऐसा ही अहोभाव–धन्यता प.पू. गुरुजी जैसी विभूति मिलने से हम अखंड अपने भीतर महसूस करें...

हम सभी को सहज ही जिज्ञासा रहती होगी कि गुरुवर्य योगीजी महाराज व गुरुहरि काकाजी महाराज के जोग में प.पू. गुरुजी कैसे आए होंगे ? वैसे तो जन्मों की पहचान थी, पर लौकिक दृष्टि से प.पू. गुरुजी मुंबई की जयहिंद कॉलेज में सायन्स के प्रथम वर्ष में पढ़ते थे। एक दिन क्लास में बैठे-बैठे उनके एक मित्र प.भ. देवेन्द्र पटेल ने उन्हें बताया कि हमारे गुरु योगीजी महाराज यात्रा से आ रहे हैं और शाम को '**सुंदराबाई हॉल**' में उनका स्वागत समारोह रखा है। मैं जाने वाला हूँ, तुम भी साथ चलो। प.पू. गुरुजी की तो इच्छा नहीं थी, पर उनके पिताश्री संतों के दर्शन, समागम वगैरह में दिलचस्पी रखते थे। सो, प.पू. गुरुजी ने अपने पिताश्री को बताया। प.भ. देवेन्द्रजी के साथ दर्शन करने के लिए शाम को जब वे अकेले जाने लगे, तब सिर्फ एक शिष्टाचार के कारण प.पू. गुरुजी साथ में गए। **ग्यारह जुलाई 1954 की वह घड़ी मानो पूरे जीवन को ही पूर्णतया बदलने वाली मंगलमयी धन्य घड़ी बन गई !** प्रथम दर्शन में ही प.पू. गुरुजी को गुरुहरि योगीजी महाराज खूब जँच गए और प.पू. काकाजी की अलबेली मूर्ति तो उनसे भी ज्यादा भा गई ! उस दिन सभा में प.पू. काकाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज की महिमा की एवं स्वामिनारायण संप्रदाय की जो बातें करी, उससे प.पू. गुरुजी को लगा कि इतने सारे बोलने वाले यहाँ हैं, लेकिन प.पू. काकाजी कोई अलग ही विभूति हैं। फिर जब लाईन में क्रम से प.पू. गुरुजी गुरुहरि योगीजी महाराज के चरण स्पर्श करने गए तो प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज से उनकी मूर्ति माँगी। गुरुहरि योगीजी महाराज बोले कि दादुभाई साहेब के यहाँ जाना, इनके पास से मिल जाएगी। यूं संबंध में आते ही प.पू. बापा का पहला जेस्चर ही खूब सांकेतिक-रहस्यपूर्ण था कि

प.पू. काकाजी ही तुम्हारे चैतन्य के राहबर होंगे। एक-दो दिन के बाद प.पू. गुरुजी ताड़देव गए और प.पू. काकाजी से बापा की मूर्ति माँगी। तो प.पू. काकाजी ने उन्हें अपने ऑफिस आने कहा। प.पू. गुरुजी प.पू. काकाजी की ऑफिस गए। वहाँ प.पू. काकाजी ने बापा की कंठी वाली बड़े पतले शरीर की एक बस्ट ब्लॅक एण्ड व्हाईट मूर्ति उन्हें दी। तब बातों के दौरान ही प.पू. काकाजी ने कहा कि–

करसनजी देसाई का प्रसादी का तुम्हारा कुटुंब ! करसनजी देसाई मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी से खूब नज़दीक से जुड़े हुए थे। यूं तुम्हारा सारा फेमिली महाराज के संबंध वाला बोला जाए। फिर एकदम बोले कि ये योगीजी महाराज एक सूर्य हैं। सूर्य प्रगट न हो, तो अंधेरा जाएगा नहीं। सूर्य की कोई कितनी ही कल्पना करे या चित्र देखे तो अंधेरा जाएगा नहीं। इसी प्रकार भगवान भी प्रगट होने चाहिए और भगवान स्वामिनारायण का यह वरदान है। फिर बातों बातों में अपनी छाती पर हाथ थपथपाते बोले कि ***बापा तो सूर्य हैं ही, पर बापा के आशीर्वाद से मैं भी एक सूर्य हूँ।*** उस दिन से प.पू. गुरुजी के दिल और दिमाग में यह बात बैठ गई कि **हम भगवान का कितना ही भजन करें-भक्ति करें लेकिन हमारे वे भगवान प्रगट स्वरूप में अगर हमें नहीं मिले हों, तो कोई अर्थ ही नहीं है।** आश्चर्य है कि पहली मुलाकात में ही प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को यह गूढ़ रहस्य की बात करी।

यूं सूर्य की बात से उन्होंने 1954 में प.पू. गुरुजी के साथ दिव्य संबंध की शुरुआत करी और **25 जनवरी 1986** को जब स्थूल रूप से प.पू. गुरुजी को आख़िरी बार मिले तब भी सूर्य की बात करते हुए भव्य आशीर्वाद दिए कि –

वो आकाश का सूर्य, मैं भी सूर्य और तुम्हारे हृदयाकाश के अंदर भी सूर्य है–जाओ तीनों एक ! प.पू. पप्पाजी के शब्दों में– ***''इसे ही तो गुरु के द्वारा किया 'शक्तिपात' कहा जाए !''*** और... साधु की सिद्धि की यही पराकाष्ठा है !!

प.पू. काकाजी के बारे अक्सर ऐसा लगता है कि उनकी बातों में कोई रेलिवेन्सी रहती नहीं थी, पर खूब गहराई से विचारें तो **जन्मों जन्म की रेलिवेन्सी रखने वाले वे परमपुरुष थे;** तो इनके वाणीप्रवाह की तो क्या बात ?

1961 में गुरुहरि योगीजी महाराज के वचन से प.पू. गुरुजी साधु हुए... गुरुहरि योगीजी महाराज और प.पू. काकाजी जैसी विभूतियाँ चैतन्यदर्शी होती हैं। तभी तो पाँच-पाँच जन्मों से साथ आ रहे उनके चैतन्य को इन्होंने पहचान लिया था। एक बार जेतलपुर मंदिर में गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. गुरुजी को एक चिमटा दिखाते हुए पूछा भी कि पता है यह क्या है-किसका है ? प.पू. गुरुजी तो तब कुछ समझे नहीं थे; फिर प.पू. काकाजी ने समझाया था कि –

महाराज के समय में हुए सद्‌गुरु आनंदस्वामी का यह चिमटा है और वो आनंदस्वामी आज तुम्हीं हो; सो, प.पू. बापा ने तुम्हें वह दिखा कर पूछा...!

1966 में संस्था ने संतों को विमुख किया तब से प.पू. काकाजी की सेरेछाया में उनके ही भरोसे, उनके वचन से प.पू. गुरुजी का अध्यात्म सफर शुरु हुआ ! 1971 में गुरुहरि योगीजी महाराज ने स्थूल शरीर छोड़ा। स्वाभाविक रूप से प.पू. गुरुजी अंदर से मायूस जैसे हो गए, परंतु प.पू. काकाजी ने सांकरदा मंदिर में आते ही सबसे पहला वाक्य जो कहा उससे **प.पू. गुरुजी को भीतर में शांति-शांति हो गई !** प.पू. गुरुजी यह प्रसंग बताते हुए कहते हैं कि – 'मैं साकंरदा मंदिर के हॉल के कोने में खड़ा था। प.पू. काकाजी ठाकुरजी को दण्डवत् कर रहे थे... दण्डवत् करते-करते मुझे देख कर बोले कि –

कोई चिंता नहीं करना; बापा से अधिक तो नहीं, पर बापा जितना सुख तो हम जरुर देंगे। ' प.पू. गुरुजी अक्सर बताते हैं कि **अगर हम प्रगट स्वरूप के साथ सच में जुड़ गए होंगे, तो उसके स्थूल शरीर छोड़ने के बाद जहाँ भी उसका प्रगटीकरण होगा, वहाँ बिना कोई शंका उसी निष्ठा से हम उनसे अपने आप जुड़ जाएँगे।**

अब,1954 से 2005 यानि 50 साल का आधा शतक पूरा हुआ। घटनाओं से भरपूर पचास वर्ष का एक इतिहास है ! कहा जाता है कि सिंहनी का दूध स्वर्ण पात्र में ही टिकता है। ठीक उसी तरह 50 साल के अपने सफर में प.पू. गुरुजी कसौटी पर पूरे खरे उतर कर प.पू. काकाजी की यानि अपने गुरु की प्रसन्नता का पात्र तो बने ही, इससे भी अधिक – वर्तन से सभी प्रगट स्वरूपों के लाड़ले बने... और आज असली नैसर्गिकी गुणातीत स्थिति-

कल्याणकारी गुण प्राप्त करके अनेक चैतन्यों के राहबर बने हैं-आत्मा के सारथी बने हैं !

प.पू. पप्पाजी के शब्दों में –

प.पू. काकाजी के 'आध्यात्मिक वारिसदार' प.पू. गुरुजी बन गए...

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के शब्दों में –

'भुलकुं' यानि बालक की भाँति निखालस व भजनीक हैं प.पू. गुरुजी... !

ताड़देव के भाईयों के सखास्वरूप,
गुणातीत समाज के मुक्तों के लिए एक आदर्श,
उत्तर भारत के मुक्तों के चैतन्यों के आत्मा के सारथी,
स्पष्टवक्ता एवं अंदर-बाहर एक–ऐसी साधुता से भरपूर,
केवल प.पू. काकाजी को राजी करने की एकमात्र चाहना,
रोम-रोम व हर सांस प.पू. काकाजी वासित,
मुमुक्षुओं-भक्तों के प्राणाधार स्वरूप
एवं
अभिप्राय की भक्ति कराने प.पू. काकाजी द्वारा चुना पात्र यानि– प.पू. गुरुजी

जब-जब मानवस्वरूप में अवतार-युगपुरुष धरती पर जीवों के कल्याण के लिए आते हैं, तो वे ऐसा कोई **'उनके अभिप्राय का कार्य'** अपने साथ जरुर लाते हैं, जो हमारे दिमाग में नहीं उतरता। पर बुद्धि से परे जाकर उसमें जो जुड़ जाते हैं वे निहाल हो जाते हैं; जैसे – श्री कृष्ण ने अर्जुन को निहाल किया था ! वह उनकी पसंदगी का पात्र था। उन्होंने ठान लिया था कि अर्जुन को 'नारायणस्वरूप' बनाना ही है। सो 'अभिप्राय की भक्ति' में जोड़ कर कुरुक्षेत्र में कौरवों को मरवा कर उसे 'नारायणस्वरूप' बना ही दिया। हाँलाकि अपने-अपने सत्य, ज्ञान, भक्ति, धर्म, त्याग के ईज़म में बंधे तत्कालीन गुरुजनों को भी यह बात रास नहीं आ सकी थी। **मुक्ति के लिए हमें बंधे रहना है 'परमसत्य स्वरुप' श्री कृष्ण परमात्मा से, ना कि 'हमारे मनमाने सत्यों' रूपी बेड़ियों से**–इस तथ्य को वे पकड़ ही नहीं पाए !

❖ गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का अभिप्राय था–मंदिर बनवाने का ! उन्होंने जब अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना के मंदिर बनवाने का बीड़ा उठाया तब कई बोलते भी रहते कि क्या ईंट, मिट्टी, पत्थर उठाने को भगवान भजना कहा जाता है ? दिमाग में बात बैठने जैसी नहीं थी। यूं इस लोक की क्रिया या आचार-व्यवहार के साथ भगवान व संत की रीति-नीति शायद मिलती दिखाई ना भी पड़ती हो, पर उनकी अलमस्ताई, निःशंक-निधड़क वर्तने की जीवनशैली उनके सत्य स्वरूप की प्रतीति मुमुक्षुओं को करा देती है और एक दृढ़ विश्वास रख कर जो-जो इस अभिप्राय में जुड़ जाते हैं, वे निहाल हो जाते हैं।

❖ ऐसे ही गुरुहरि योगीजी महाराज का अभिप्राय था कि पढ़े-लिखे युवकों को साधु बना कर समाज का आध्यात्मिक उत्थान करें। पर, उस समय ऐसी धारणा थी कि जो आर्थिक स्थिति से लुढ़का हो, बुजुर्ग हो, अनपढ़-गँवार हों वही साधु बनते हैं और तत्कालीन समाज तो अपनी सीमित बुद्धि से मानता था कि युवकों की तो देश को, सेना को खूब जरुरत है। लेकिन, प.पू. काकाजी ने तो उनके अभिप्राय की भक्ति में खुद को याहोम कर दिया। इससे भी अधिक इन्होंने यही चाहना रखी कि मूर्ति का सुख-आनंद जो उन्होंने लूटा है, वो इनके संबंध में जो-जो आएं उन सभी को प्राप्त हो।

दूसरी ओर गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा से प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी बहनों के भगवान भजने के क्रांतिकारी कार्य का अभिप्राय लेकर भी लग पड़े। जबकि तब का रूढ़िवादी समाज उन्हें समझ नहीं पाया और खूब विरोध करा... भयंकर अपमान-गालियाँ खानी पड़ीं। हाँ, उस समय जो-जो इस अभिप्राय में जुड़ गए, वे सब निहाल हो गए !

❖ ऐसे ही दिल्ली में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज का मंदिर बनाने का गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज-गुरुहरि योगीजी महाराज का संकल्प झेल कर प.पू. काकाजी ने **1969 में** अपने पसंदीदा पात्र प.पू. गुरुजी को दिल्ली भेजा और श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण करवाया। **प.पू. गुरुजी उनके अभिप्राय की इस भक्ति में जुड़ गए और निहाल हो गए।** प.पू. काकाजी ने 1976 में अपने एक पत्र में प.पू. गुरुजी को लिखा भी है कि–***मेरे जैसे मिस्टीरियस विभूति का तुमने संपूर्ण भरोसा किया है, तो खूब-खूब निहाल हो जाओगे।***

जूनागढ़ में जब श्रीजी महाराज ने मंदिर बनाने की अपनी इच्छा बताई, तो जूनागढ़ के नवाब ने श्रीजी महाराज के चरणों में प्रार्थना रखी कि महाराज ! आप अपने जैसा ही फकीर जूनागढ़ के मंदिर में रखना। श्रीजी महाराज हँसते हुए बोले कि हाँ हम अपने जैसा ही फकीर यहाँ रखेंगे। फिर मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी को जूनागढ़ मंदिर के महंत के रूप में नियुक्त किया था। इसी तरह प.पू. काकाजी ने अपने जैसे ही कल्याणकारी गुण देकर अपने पनौते मानस पुत्र प.पू. गुरुजी को उत्तर भारत के मुक्तों का उद्धार करने चुना और... जैसे महाराज मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी के जमानती बने वैसे ही प.पू. काकाजी दिल्ली के-प.पू. गुरुजी के जमानती बने। प.पू. काकाजी ने पत्रों में उनको लिखा भी है कि –

❋ ***तुमने जो विश्वास हम में रखा है उससे अब सारी ही–सभी प्रकार की तथा संपूर्ण जवाबदारी मेरी और पू. हरिप्रसादजी की रहती है...***

❋ ***तुम्हारा ही निजी रह कर सहाय करूँगा...***

❋ ***आधी रात को भी तुम्हारे काम में खड़ा रहूँगा।***

आज प.पू. गुरुजी अपने वर्तन द्वारा प.पू. काकाजी को जीवंत रखते हुए दिन-रात एक धुनी जमा कर यहाँ बैठे हैं।

प.पू. काकाजी से प.पू. गुरुजी ऐसे जुड़ गए कि प.पू. काकाजी पूरे के पूरे उनमें समा गए हैं। स्थूल शरीर छोड़ने से पहले हम सब पर कृपा करके यह रहस्य भी सांकेतिक रूप से प.पू. काकाजी देकर गए हैं।

❖ प.पू. काकाजी 1985 दिसंबर में आख़िरी बार जब पंजाब गए थे, तो लुधियाना में प.भ. कमलदेवजी की हाज़िरी में **सरदार गुरुबक्षजी** के घर बोले थे कि ***अब मुझे मिलना हो, तो दिल्ली में मिलना।*** दूसरी ओर दिल्ली से आख़िर जाते हुए 6 दिसंबर 1985 को **प.भ. आर.के. पटेल साहेब** के घर उनकी धर्मपत्नी प.मु. मंजुलाबहन की हाज़िरी में बोले थे कि – ***मैं अंतर्धान भी हो जाऊँगा, पर तुम्हारे बीच दिल्ली रहूँगा।*** तो, दिल्ली में मिलना यानि– ***प.पू. गुरुजी द्वारा ही मिलने का संकेत था ना ?***

❖ ठीक इसी तरह मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी जब अंतिम बार जूनागढ़ से गाँवों में विचरण के लिए निकलने लगे, तब अनादि महामुक्त जागास्वामी उनके लिए घोड़ी तैयार करके लाए। स्वामिश्री उस पर बैठे और चलने की तैयारी करने लगे इतने में स्वामिश्री के सिर का रूमाल नीचे गिर गया। अ.म.मु. जागास्वामी ने वो उठा कर स्वामिश्री को दिया। तब स्वामिश्री बोले कि – ***'यदि अस्वार के माथे की पाघ या तो रूमाल नीचे गिर जाए, तो समझ लेना कि वह घर वापिस नहीं आएगा।'*** स्वामिश्री की इस बात का मर्म अ.म.मु. जागास्वामी समझ गए... तत्पश्चात् स्वामिश्री मंदिर के दरवाजे के सामने देख कर बोले – *'श्रीजी महाराज ने यह मंदिर हमें सौंपा था। तब से आज तक चालीस साल, चार महीने और चार दिन तक हम इसमें रहे और इसे संभाला। अब विचरण में निकलते हैं, सत्संग में घूमेंगे और फिर **'महुआ' जाकर रहेंगे।'*** 'महुआ' गाँव भगतजी महाराज का गाँव था। जूनागढ़ छोड़ते हुए बोला यह वाक्य रहस्य लिये हुए था कि ***अब 'भगतजी महाराज' के रूप में प्रगट रह कर स्वामिश्री मिलेंगे।***

❖ ऐसे ही देह छोड़ने के आख़िरी दिनों में ब्रह्मस्वरूप प.पू. भगतजी महाराज ने बहुत बीमारी ग्रहण करी थी। सभी भक्तों को लग रहा था कि भगतजी महाराज अब देह छोड़ देंगे। स. 1954 कार्तिक शुक्ल 13 की सुबह भगतजी महाराज के आसपास प्रभुदासभाई, शंकर भगत एवं पीज गाँव के मोतीभाई बैठे थे। जेठा भगत भगतजी महाराज के पाँव दबा रहे थे। इतने में भगतजी महाराज एकदम बोले कि ***कोठारी प्रभुदास, मुझे वड़ताल ले चलो– मुझे वड़ताल ले चलो...*** यूं तीन बार बोले। इतना कह कर बोले मुझे बैठा कर दो। मोतीभाई और कोठारी प्रभुदास उन्हें बिठाने खड़े हुए, पर इतने में तो भगतजी महाराज खुद ही एकदम उठ कर समाधि अवस्था में बैठ गए और शरीर छोड़ दिया ! ***'मुझे वड़ताल ले चलो...'*** इस अंतिम वाक्य का मर्म यही ना कि ***'शास्त्रीजी महाराज के रूप में' अब 'वड़ताल' में तुम्हें मिलूँगा।***

❖ श्री दिनकर जोशी ने भी ***'श्याम फिर एक बार तुम मिल जाते'*** में लिखा है कि– श्री कृष्ण के अंतर्धान होने का संदेश देने अर्जुन जब वसुदेव-देवकी के पास गए, तब सर्वप्रथम वसुदेवजी ने अर्जुन को बताया कि श्री कृष्ण ने आख़िरी बार उनसे विदाई लेते हुए स्वयं ही कहा था कि

तात ! अर्जुन यहाँ आएगा। शेष यादव वंशजों की योग्य व्यवस्था वही करेगा ! अर्जुन में ही अब आप कृष्ण को देखना।

ऐसी भगवत्स्वरूप विभूतियों का बोलना खूब सांकेतिक होता है। प.पू. काकाजी ने हम सब पर खूब कृपा करी है कि प.पू. गुरुजी के रूप में वे हमारे साथ रहे हैं ! **अब हम इस 'अनमोल धरोहर' को संभालने जाग्रत बनें !**

आइए, गुणातीत भाव के मार्मिक रहस्य छिपाए प.पू. गुरुजी के प्रेरक प्रसंगों को दिल की गहराई से सच्ची महिमा-दिव्यता से निहारें, जिससे कि हमें जरुर एक नई दिशा मिलेगी और जीवन भव्य प्राप्ति के आनंद से भरा-भरा हो जाएगा...

स्वामीसेवकभाव का मूर्तस्वरूप यानि — प.पू. गुरुजी

❋ थोड़े दिनों से एक अनजान व्यक्ति जो यूं तो स्वामिनारायण धर्म से परिचित था, परंतु अक्सर प.पू. गुरुजी को लंदन से फोन पर अपशब्द कहा करता था। 'साधुता' रखते हुए प.पू. गुरुजी अपने बारे कहे अपशब्द तो सुनते रहते थे। लेकिन एक दिन उसने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के बारे कुछ गलत बोलना शुरु करा। तब पास बैठा भक्तगण—'मेरे बारे क्या सोचेगा' इस बात की तनिक भी परवाह किए बिना वचनामृत—गढडा मध्य प्रकरण के ९, ६० एवं पंचाला प्रकरण का ९ को लक्ष्य में रखते हुए खूब ऊँची आवाज़ से उसे डाँटते हुए प.पू. गुरुजी बोले कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसी विभूतियों के बारे मैं तुम्हारा एक भी अपशब्द नहीं सुनूँगा। खूब नाराज़ होते हुए बोले कि आज के बाद दोबारा ऐसे फोन करने की हिम्मत नहीं करना। शाम की सभा के कारण वहाँ सब हरिभक्त भी बैठे थे। उन्होंने प.पू. गुरुजी के मुख पर इतनी नाराज़गी जो देखी तो हर एक समझ गया कि हम कभी यदि ऐसी झंझट में पड़ने गए, तो प.पू. गुरुजी के दिल में हमारा स्थान तो दूर... वे अपने पास भी फटकने नहीं देंगे।

❋ प.पू. गुरुजी ने हमेशा अपने वर्तन से उपदेश दिया है। आज वे स्वरुपों से—साथीदारों से फोन पर या पत्र लिख कर प्रार्थना करते हैं, तो वो इतनी अधिक मार्मिक-दिल की सच्चाई से होती है कि हर एक के दिल को छू जाती है। मानो कोई कॉन्शियसनेस ही नहीं कि मैं भी कुछ हूँ। अनेक बार प.पू. गुरुजी द्वारा लिखी प्रार्थना पढ़ कर हृदय गिलगिला हो जाता है और हमें सीख मिलती है कि कितनी भी ऊँची कक्षा पर क्यों न पहुँच जाएं, पर **सच्ची साधुता झुक कर रहने में ही निहित है।** प.पू. गुरुजी में ऐसी सच्ची साधुता का दर्शन कई प्रसंगों से होता है।

संबंध की महिमा के आदर्श यानि — प.पू. गुरुजी

❋ पिछले वर्ष फागुन शुक्ल - 1 के मुताबिक प.पू. गुरुजी की जयंती पानीपत में प.भ. पुनीत गोयलजी के यहाँ मनाई। उस दिन शाम की सभा के पश्चात् रात को सभी पानीपत ही ठहरे। दूसरे दिन उनके घर महापूजा करके दोपहर का प्रसाद लेने के बाद दो-तीन घरों में पधरामनी करके प.पू. गुरुजी दिल्ली के लिए रवाना हुए। रात को करीब साढ़े आठ बजे मंदिर आए। ठण्ड का मौसम था और प.पू. गुरुजी खूब थके हुए होने के बावजूद सवा नौ बजे तो बेला रोड मंदिर में ठहरे माणावदर मंडल को मिलने गए ! प.पू. गुरुजी बोले कि **माणावदर यानि— 'प.पू. काकाजी का गोकुळिया गाँव !'** इन हरिभक्तों को मिलने जाना 'भक्ति' कही जाए। प.पू. गुरुजी की हर क्रिया से ऐसा लगता है कि उनके मन में **सिर्फ एक ही रटना-लगन लगी रहती है कि प.पू. काकाजी के संबंध वाले राजी होंगे तो मुझे काकाजी की मूर्ति-प्रसन्नता मिल जाएगी।**

❋ अभी-अभी 24 जनवरी 2005 की सायं प.पू. गुरुजी प.भ. अनुज भईया के घर जा रहे थे। रास्ते में ही प.पू. गुरुजी को मेसेज मिला कि जगरांव वाले प.भ. बलवंतराय भारद्वाजजी के दामाद का बीमारी के कारण अक्षरवास हो गया है। प.भ. अनुजभईया के यहाँ पहुँचते ही अगले दिन की सुबह तड़के प.भ. बलवंतरायजी को मिलने जगरांव के लिए निकलने का प्रोग्राम बनाया। प.पू. गुरुजी की तबियत की चिंता व लगाव के वश पंजाब के हरिभक्तों ने कहलवाया कि यहाँ खूब ठंड है, तो प.पू. गुरुजी अभी ना आएं। तब तुरंत प.पू. गुरुजी बोले कि— ***अब तो कार भी वातानुकूलित हैं, प.पू. काकाजी तो खुली जीप में कड़ाके की ठंड में तड़के-सुबह चार-पाँच बजे पंजाब जाने निकलते थे*** और... सुबह प.पू. गुरुजी जगरांव जाने निकले ही।

पर, प.पू. गुरुजी पंजाब पहुँचने वाले थे, उससे आधे घंटे पहले ही वहाँ पर तेज धूप निकल आई थी और मौसम एकदम अच्छा हो गया था। फिर प.पू. गुरुजी वहाँ से दिल्ली के लिए लौटने निकले ही कि आधे घंटे में बादल दोबारा छा गए ! इस बात पर प.पू. गुरुजी ने पंजाब से वापिस आते ही मर्म समझाया कि–

''हम अगर भक्तों के लिए भीड़ा उठाते हैं, तो महाराज हमारे लिए माहौल अनुकूल कर देते हैं, सब हमारे हिसाब से सेट कर देते हैं। पर, हमारी वह क्रिया सच में महाराज को राजी करने होनी चाहिए। कई बार हम भक्तों के लिए कुछ करते हैं, पर एहसान जताने के लिए या 'वाह-वाह' ऐंठने के लिए और दस जगह कहते फिरेंगे कि मैंने यह किया-वो किया।''

पंजाब से रात साढ़े आठ-पौने नौ बजे तो प.पू. गुरुजी मंदिर पहुँचे और मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन यानि– पोषी पूर्णिमा होने के कारण खूब ही उमंग और उत्साह से कथावार्ता भी करी। सभी प.पू. गुरुजी की ओर ही देखते रहे कि 68 साल की उम्र में सुबह पाँच बजे से रात के ग्यारह बजे तक ना कोई थकान और भक्तों की पराभक्ति करनी वो अपने जीवन से यूं सिखाते हैं।

यूं हर एक के दुःख-सुख के प.पू. गुरुजी हमेशा शुद्ध भाव से भागीदार बने हैं और इसीलिए उनकी यह अदा सभी को भीतर में खूब छू जाती है। आत्मीय स्वजन **श्री काशीरामभाई राणा साहेब** को जब यह पता चला कि स्व. डॉ. मांडके साहेब ने प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी का हार्ट आप्रेशन खूब अपनेपन से किया था सो ही–प.पू. गुरुजी की आज्ञा से प.पू. दीदी स्व. डॉ. मांडके की बेटी डॉ. चारुता की शादी के निमित्त मुबंई गए हैं, तो प.भ. राणा साहेब सहज ही बोले कि– ***गुरुजी ! मुझे आपकी यह बात बहुत अच्छी लगती है कि आप कभी किसी का करा हुआ भूलते नहीं और हमेशा भक्तों के सुख-दुःख के प्रसंगों में खड़े रहते हो !***

✱ प.पू. गुरुजी का जो कोई एक बार भी दर्शन करता है, तो उनकी मुखाकृति जाने-अनजाने भी उसे उनकी ओर सहज ही आकर्षित करती है-खींचती है।

एक बार दिल्ली एयरपोर्ट पर प.पू. गुरुजी को देख कर एक विदेशी ने सद्भावना से दूर से सिर झुकाया। प.पू. गुरुजी ने प.भ. राकेशभाई से उनका परिचय पुछवाया और 'सर्वोपरि स्वामिनारायण' की ब्रॉशर व प.पू. काकाजी महाराज की पोस्टल स्टेम्प देने कहा। बातों-बातों में पता चला कि वे 'इटली' से आए हैं और मनाली जाने के लिए एयर टिकट की कोशिश कर रहे हैं। पर, उन्हें वहाँ की फ्लाईट मिली नहीं। प.पू. गुरुजी ने उन्हें कहलवाया कि आप हमारे साथ मंदिर चलो; वहाँ से कोई बंदोबस्त करेंगे। अन्य तीर्थस्थानों का लालची माहौल देख कर वे थोड़े डरे हुए थे। पर, प.पू. गुरुजी की आँखों में उन्हें शांति, खूब सच्चाई, अपनापन दिखाई दिया। वे मंदिर आए, ठाकुरजी का प्रसाद लिया। फिर प.पू. गुरुजी ने उनके लिए मनाली जाने गाड़ी व वहाँ भी भरोसे वाले होटल में रहने-करने की सारी सुविधा कर दी। प.पू. गुरुजी द्वारा दी गई निःस्वार्थ आवभगत उन्हें साश्चर्य भीतर तक स्पर्श कर गई।

इस प्रसंग द्वारा दो बातें सामने आईं। एक तो– 'इटली' प.पू. काकाजी का प्रसादी का स्थान जिसके बारे प.पू. काकाजी बोले थे कि वहाँ हमारा एक सेन्टर होगा। प.पू. गुरुजी को प.पू. काकाजी की कही बातों पर खूब भरोसा है। सो, प.पू. गुरुजी ने इन्हें 'इटली के' जान कर किसी भी प्रकार से प.पू. काकाजी की सेवा कर लेने हाथ-पाँव मार लिए ! दूसरा – यह भी समझना होगा कि एक सद्भावना वाले के प्रति भी प.पू. गुरुजी यदि इतने अधिक कन्सर्न रहते हैं, तो हम जो **इनके साथ जुड़े हैं, इनके वचन से सेवा वगैरह करते हैं, इनका आसरा लिए हुए हैं, भले ही अपने ढंग से–पर, इनके होकर रहे हैं, उनकी परवरिश के लिए तो वे कितने व कैसे तत्पर रहते होंगे ?**

भक्तों की पराभक्ति ही जिनका जीवन यानि– प.पू. गुरुजी

✱ पंजाब-जगरांव के प.भ. विशाल शर्मा का रिश्ता पक्का हुआ। सो, रस्म करने उसके परिवार के सभी दिल्ली आए। उन्होंने प.पू. गुरुजी से शादी की तारीख पूछी। प.पू. गुरुजी बोले कि प.भ. नवीनभाई के सुपुत्र आशिष की शादी 3 फरवरी की है, तो उसी दिन विशाल की भी पक्की कर दो। इससे खर्चा भी आधा हो जाएगा-दोनों परिवारों पर आर्थिक

दबाव भी कम पड़ेगा। और... दूसरे दिन सुबह करीब साढ़े सात बजे तो प.पू. गुरुजी द्वारा एक लिस्ट बन कर 'अक्षरज्योति' पहुँच गई ! खाने की व्यवस्था, मेहमानों के रहने जगह, सजावट, बैंड-ढोल, घोड़ी, फोटोग्राफी, विडियोग्राफी जैसी छोटी-छोटी चीजों को नोट करके उन्होंने भेजा था !!

सच ! प.पू. गुरुजी की भक्तों के प्रति कैसी भावना कि उन पर भार कम पड़े और कैसी चिंता कि क्या-क्या व्यवस्थाएँ करनी होंगी। सो, सुबह जल्दी उठ कर खुद लिस्ट बनाई !

ऊपरी स्तर से देखें तो साधु को भला इन चीजों से क्या ? पर, सच्चा साधु अपने आश्रितों की व्यावहारिक व आध्यात्मिक दोनों जिम्मेदारी लेता है। **हमारे लिए वे हमारे लेवल पर आकर रसबस होते हैं, ताकि हमें उनसे तनिक भी डिस्टेन्स ना रहे।**

यूं दिन हो या रात प.पू. गुरुजी के जीवन की सैकण्ड-सैकण्ड केवल संबंध में आए भक्तों को सहायभूत होने– उन्हें किसी भी तरह खुश रखने की एकमात्र चाहना से भरी है। भगवान व संत को जीवन के केन्द्र में रख कर हर एक सुखी हो–यही है प.पू. गुरुजी की चैतन्यलक्षी जीवनशैली। भक्तों की भक्ति यानि 'पराभक्ति' की शुरुआत स्वयं जीवन जीकर प.पू. काकाजी ने जो करी, आज उन्हीं के नक्शे कदम - सिद्धांतों पर प.पू. गुरुजी निरंतर अग्रसर हैं।

उत्तर भारत में आत्मीय दिव्य गुणातीत कुनबे के सर्जक यानि — प.पू. गुरुजी

✱ वचनामृत गढडा अंत्य प्रकरण के २१ में श्रीजी महाराज द्वारा बताई कुटुंबभावना के सिद्धांत को लेकर चले प.पू. काकाजी के संकल्प को सार्थक करते हुए प.पू. गुरुजी ने यहाँ एक गुणातीत कुनबे का सर्जन किया है। प.भ. नीलकंठभाई की सुपुत्री सौ. कां. स्मृति की शादी 9 दिसंबर 2004 को मंदिर में हुई थी। मात्र दो दिन में ही यह शादी करनी थी। सो, सभी ने अपने काम-धंधे से छुट्टी करके भाई-भाभियों, युवकों-बहनों ने मिलजुल कर सारी जिम्मेदारी बाँट ली। सारा माहौल भक्तों की निराली भक्तिमयी सुवास से महक उठा था। शादी के बाद सौ. स्मृति व उसके पति प.भ. त्रुषार कुमार प.भ. विजयपालजी के घर रुकने जाने वाले थे। प.भ. विजयपालजी की पत्नी सौ. शशि भाभी की भावना थी कि शादी के बाद ये पहली बार आएंगे, सो उन्हें कुछ देना है। तब प.भ. विजयपालजी सौ. शशि भाभी से बोले कि ***कोई ऐसा-वैसा सूट मत लाना, तू खुद जैसे मंहगे-अच्छे सूट पहनती है वैसा लाना।*** जब ये बातें सुनते हैं, तो मन में ऐसा होता है कि अहो काकाजी ! कैसे दिव्य और आत्मीय समाज में आपने हमें रख दिए हैं।

✱ पुराने जोगी प.भ. नवीनभाई के सुपुत्र आशिष की शादी 3 फरवरी को होनी निश्चित की गई थी। शादी के करीब एक महीने पहले आशिष प.भ. अनिलजी के घर किसी काम से गया। वहाँ उसके व्यापार की सेटिंग की बातों में प.भ. अनिलजी ने उसे कहा कि अभी तेरा अपना कोई ऑफिस नहीं है, तो तू मेरे ऑफिस में बैठ कर अपना काम शुरु कर। यहाँ तक कि उसे अपने ऑफिस की चाबियाँ भी थमा दी। इससे भी अधिक मानो खुद के भाई की या बेटे की शादी हो ऐसी भावना से प.भ. अनिलजी व उनकी पत्नी सौ. निशि दीदी ने यह आग्रह किया कि आशिष की बारात उनके घर से निकले। इनकी यह बात सुन कर प.पू. गुरुजी बहुत राजी हुए और सहज ही बोले कि प.पू. काकाजी ऐसे ही आत्मीय परिवारों की चाहना रखते थे–वो आज साकार होती नज़र आती है।

✱ 3 फरवरी को प.भ. आशिष की बारात ने जब प.भ. अनिलजी के घर से प्रस्थान किया था, तो खूब कम समय में एक अपनेपन से जुड़े **सत्यवती कॉलोनी** के **प.भ. मोहन बंसलजी** ने अपने घर के बाहर सभी हरिभक्तों के लिए जलपान की व्यवस्था रखी थी। बातों-बातों में उन्होंने अपनी भावना बताई कि अगली बार हमारे यहाँ से भी किसी भक्त की बारात प्रस्थान का मौका जरुर देना। संजोगवश हमारे पुराने जोगी डॉ. जे.पी. शर्मा के सुपुत्र–विजय की शादी 12 मार्च को होनी निश्चित हुई। शादी मंदिर में ही होनी थी, सो प.भ. मोहन बसंलजी के यहाँ से विजय की बारात का प्रस्थान रखा गया। प.भ. मोहन बंसलजी ने करीब चार सौ बारातीओं के लिए अल्पाहार आदि की व्यवस्था तो करी ही, पर उन्होंने व उनकी धर्मपत्नी ने विजय को श्रीफल देकर इस कदर तिलक किया, मानो उनके खुद के

लड़के की शादी हो ! यह देख कर प.पू. काकाजी द्वारा प.पू. गुरुजी को कही बात सहज याद आ जाती है कि ***'निष्ठा वाले भक्त तुम्हें मिल जाएंगे।'***

हम सिर्फ इतना ही सोचें कि ऐसे समाज के सर्जन में उन्हें क्या स्वार्थ है ? लेकिन प्रसंग-प्रसंग पर हमें दर्शन कराते हैं कि यदि हम **इस दिव्य समाज में खो जाएंगे, तो अपना 'स्व' कब पिघल जाएगा वह पता भी नहीं चलेगा और निश्चित रूप से हमारा जीवन निश्चिंत, सुरक्षित और अमृतमय बन जाएगा।** हम मानें ही कि हम सभी एक। कोई तेरा-मेरा नहीं-कोई स्वार्थ नहीं, कोई ऊँच-नीच नहीं, कोई भेदभाव नहीं–सब कुछ हम सभी का सांझा है।

सहज-सरल बातों में भी रहस्य-मर्म दर्शाने वाले यानि — प.पू. गुरुजी

✱ प.भ. अनिलजी के बेटे दिव्यांग का दाखिला दिल्ली के मॅडिकल कॉलेज में हुआ है। दशहरे के दिन दोपहर को प.भ. अनिलजी अपने परिवार के साथ मंदिर आए हुए थे। बातों-बातों में उन्होंने प.पू. गुरुजी को बताया कि दिव्यांग के कॉलेज में रेगिंग चल रही है। सीनियर विद्यार्थी जूनियर्स के चश्मे वगैरह उतार कर लात-घूसे, थप्पड़ भी मारते हैं। पहले तो प.पू. गुरुजी ने सहज ही पूछा कि क्या कोई उन्हें कुछ कह नहीं सकता ? तो दिव्यांग बोला कि वो तो प्रेम से सहना ही पड़ता है।

उसी समय प.पू. गुरुजी एक मार्मिक रहस्य बताते हुए बोले कि– आज हमें डॉक्टर की **पढ़ाई करने की गरज है और वहाँ की वेल्यू हमें पता है** कि दिल्ली के मेडिकल कॉलेज में दाखिला मिलना ही बहुत बड़ी बात है। **तो हम ये सब सहन कर जाते हैं।** पर, **यहाँ सत्संग में मुक्तों में से किसी ने हमें ऐसा कुछ किया हो, तो हमें बुरा लग जाता है।** अरे ! मुक्तों की बात तो छोड़ो, यदि संतों ने भी कुछ कहा-करा हो तो उन पर ही कितने **हावी हो जाएंगे कि क्या यह सत्संग है ?** हमें ऐसी महिमा नहीं है कि प.पू. काकाजी की यह जगह कुछ अलग है और **मुक्तों का कुछ सह लेंगे, तो प्रभु हमारे वश हो जाएंगे** ! प्रभु को पा लेने की गरज तो हमें ही रखनी है।

कैसी छोटी-छोटी बातों से वे इतने मार्मिक रहस्य देकर हमें जाग्रत करते हैं कि कहीं अपनी नादानी- लापरवाही-भोलेपन या ज्यादा होशियारी में ऐसा भव्य मौका हम गवाँ ना दें और इस अनमोल संबंध की वेल्यु समझें।

✱ पानीपत से प.भ. नवनीतजी की चार साल की बच्ची 'मुग्धा' आती है.... बच्चों को थोड़ा ऐसा रहता ही है कि यह चीज सिर्फ मेरी है, इसमें से मैं किसी को ना दूं। हमने देखा है कि प.पू. गुरुजी सेवक द्वारा उसे कहलवाते थे कि ***'बाँटने से चीज बढ़ती है और रख रखने से सड़ती है।'***

यही विचारें कि इतने छोटे बच्चों से प.पू. गुरुजी इतनी अपेक्षा रखते हैं, तो हम से तो उनकी अपेक्षाएं कैसी ऊँची होगीं... उन्हें कितना दर्द होता होगा हमारा मीसबिहेव देख कर !

प्रभुधारक साक्षात् विभूति यानि — प.पू. गुरुजी

✱ संक्रांति की भिक्षा निमित्त प.पू. गुरुजी कमल फर्निचर्स वाले प.भ. ईश्वरभाई पंचाल के घर गए थे। वहाँ प.पू. गुरुजी ने कॉफी के साथ थोड़ा नाश्ता किया। प.पू. गुरुजी के लिए कॉफी लोटे में रखते हैं और उसमें से थोड़ी-थोड़ी कॉफी लकड़ी के कप में लेकर प.पू. गुरुजी पीते हैं। कॉफी पीने के बाद सेवक जब वह लोटा धोने के लिए अंदर ले गया, तब प.भ. ईश्वरभाई पंचाल की बहु ने उस लोटे को बार-बार खूब महिमा से ऐसा कहते हुए अपने माथे से लगाया कि ***'ओहो ! यह तो भगवान का लोटा है, यह तो भगवान का लोटा है।'***

कोई चीज हमें खूब सस्ते में या बिना कोई साधन किए मिल जाती है, तो हमें उसकी महिमा नहीं रहती। अपने प्रभु कितने दयालु हैं कि दूसरों में से बोल कर हमें समझाते हैं कि हम हमें मिले स्वरूप की महिमा समझें !

✱ मंदिर में प.भ. राकेश चौहान आते हैं। थोड़े महीने पहले ही ट्रेन एक्सीडेन्ट में उनके छोटे भाई की मौत हो गई। प.भ. राकेश चौहानजी के इस छोटे भाई ने प.पू. गुरुजी के एक-दो बार ही दर्शन करे हुए थे। अचानक ही जवान बेटे की मौत से माता-पिता का दुःखी होना स्वाभाविक था। मन ही मन उनको ऐसा भी था कि उनके बेटे की अकाल मृत्यु

हुई है, उसकी आत्मा भटकती रहेगी तो ? पर, खूब आश्चर्य की बात यह हुई कि बेटे की मृत्यु के दो दिन बाद ही दुःखित माँ-बाप को **रात को एक ही समय-एक जैसा ही स्वप्न आया कि उनका बेटा चॅक्स प्रीन्ट की नीले रंग की कमीज़ पहने हुए प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के पास बैठ कर बातें कर रहा है।** दोनों को एक ही सरीखा दर्शन होने से उन्हें भीतर में ठंडक हो गई कि उनके बेटे का भले एक्सीडेन्ट हुआ है, लेकिन उसकी आत्मा कहीं और भटक नहीं रही; बल्कि सद्‌गति को पाई है। **भगवान रखे साधु के सिवा ऐसी प्रतीति और कौन करा सकता है ?**

✱ पिछले वर्ष **13 दिसंबर** को प.पू. गुरुजी की त्रिमासिक जन्म जयंती मना रहे थे। उसी दिन **प.भ. मल्कानी साहेब का** भी **जन्मदिन** होता है। शाम की सभा में प.भ. मल्कानी साहेब से परिचित श्री अख्त्यारीलालजी के सुपुत्र प.पू. गुरुजी के लिए एक बुके लेकर आए। वह बुके बहुत बड़ा और सुंदर था। प.पू. गुरुजी ने उसे ठाकुरजी के पास रखवाया। प.भ. प्रकाशभाई की बेटी कु. प्रीति ने जब से वह बुके देखा, तब से उसे वह खूब भा गया और उसके मन में था कि वो उसे मिल जाए। यह बात उसने सिर्फ अपनी ताईजी को बताई थी। जब प्रीति घर जाने के लिए निकल ही रही थी कि प.पू. गुरुजी ने सेवक से उसे गेट से वापिस बुलवाया और कहलवाया कि– यह बुके इसे दे दो। हाँलाकि प्रीति खूब आज़ाद ख्यालात वाली–एक्स्ट्रोवर्ट नॅचर की है। फिर भी प.पू. गुरुजी व अक्षरज्योति की बहनों के साथ एक ऐसे लगाव से वह जुड़ी हुई है कि उसका मन-दिल माने या ना माने पर प.पू. गुरुजी द्वारा आए किसी भी सूचन को हमेशा हर्ष से स्वीकारती है।

✱ सच्चे साधु की कोई भी क्रिया पूर्व योजित नहीं होती। वह प्रभुप्रेरित-स्वाभाविक और स्पॉन्टेनियस होती है। प.भ. आशिष व सौ. कां. धून की शादी के निमित्त प.पू. गुरुजी ने दो मालाएँ बनवाई थी। प.पू. गुरुजी सोच रहे थे कि क्या ये माला शादी के बाद दूँ या अभी ? लेकिन शादी के मंडप में जाने से पहले सौ. कां. धून जब प.पू. गुरुजी के दर्शन करने आई, तो उसने कहलवाया कि गुरुजी मुझे आशीर्वाद दें। तुरंत प.पू. गुरुजी ने उसे आशीर्वाद रूप माला भिजवाई। सौ. कां. धून एकदम बोली कि ***मुझे मन में यही था कि प.पू. गुरुजी मुझे भजन करने के लिए एक माला दें।*** यूं, उसके अंतर की प्रार्थना से प्रेरित होकर ही प्रभु ने प.पू. गुरुजी से यह जेस्चर करवाया ! प.पू. गुरुजी ने यह भी बताया कि **साधु के साथ के ऐसे प्रसंग तो स्वयं के अनुभव के लिए होते हैं, ना कि दूसरों को जताने के लिए।**

आज साधुता की इतनी उच्च कक्षा पर होते हुए भी प.पू. गुरुजी प्रगट स्वरूपों के पास ही नहीं, बल्कि संबंध में आए मुक्तों– बाल, वृद्ध, युवान सभी के पास शून्य बन कर जी रहे हैं। इससे अधिक साधुता की पराकाष्ठा और क्या ?

इन सब प्रसंगों से यही दर्शन होता है कि प.पू. गुरुजी ने हमें प्रभु की शक्ति अनुभव कराने, प्रभु के बल से जीने की करामात सिखाने अर्थात्–सर्व प्रकार से सुखी करने में कोई कमी नहीं रखी। अब कसर हमारे लेने में है... हमें उनके वचन में विश्वास नहीं रहता... प.पू. गुरुजी अपनी बातों में कहते हैं कि पूर्व का संबंध कहो या कुछ भी कहो, पर ***मुझे पहले से गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. बा के बारे मन में ऐसा बैठ ही गया था कि ये लोग कुछ अलग हैं। भले मेरा मन माने या न माने, पर यह हमेशा रहा है कि ये जो कुछ कह रहे हैं वह बात तो एकदम सच ही होगी - अभी मेरी समझ में नहीं आती, वह बात अलग है।***

अफसोस इस बात का है कि प.पू. गुरुजी की यह बात अनेक बार सुनने पर भी, हम अपनी जड़ता छोड़ने तैयार नहीं। हम से कई गुणा अधिक समझदारी–श्रद्धा तो शबरी की कही जाए। शबरी नित्य नवीन श्रद्धा से फूल बिछाती... जब से सिर्फ एक बार उसके गुरु ने कहा कि श्री राम तेरे आश्रम में आएंगे। समय वगैरह तो बताया भी नहीं था कि कब आएंगे। पर, उस दिन से रोज श्री राम की राह देखते हुए ताजे फूलों का वह रास्ता बनाती कि आज भगवान श्री राम आएंगे। मन में ऐसा रोष भी नहीं कि आते तो हैं नहीं; क्यों रोज नए फूल लगाने ? गुरु के एक वचन पर विश्वास रख कर उसने पूरा जीवन बिताया। उसके गुरु ने जब कहा था तब वो युवती थी... आख़िर राह देखते-देखते आँखें धुंधलाने लगीं, पर उसने उमंग-विश्वास नहीं छोड़ा। यूं शबरी ने साठ वर्ष तक उसके इंद्रियों-अंतःकरण को श्री राम में पिरोए रखे। **दरअसल हम 'स्व' का भाव छोड़ें, तो ही भगवान के स्वरूप का यथार्थ सुख आता है।**

यह बात तो सौ प्रतिशत पक्की है कि हम हमारे रास्ते की ओर जाग्रत नहीं हैं। भजन आदि भी सिर्फ हमारे कान ही सुनते हैं। उसके शब्दों की ओर हमारा ध्यान ही नहीं होता... गुणातीत ज्योत की बहनों ने कैसे मार्मिक शब्द प्रार्थना में लिखे– **'आराधुं अखंड प्रेमे...'** यानि अपने प्रत्यक्ष गुरुदेव की आराधना-उपासना हम **अखंड प्रेम** से करते रहें। हमें तो सत्पुरुष के साथ की प्रीति में कितने ज्वार-भाटे आते रहते हैं ? जब तक संत हमारी मर्जी के मुताबिक हमें लाड़ लड़ाए, हमारा ध्यान रखे तब तक ही हमें संत पसंद आता है। प.पू. काकाजी कहते थे कि हमारा मन ठीक हो तो 'वाह-वाह और न्यालकरण-न्यालकरण, वर्ना तेलकरण...!'

एक बहुत छोटी-सी बात भी हम समझ नहीं पाए हैं कि युद्ध में जो सैनिक होते हैं, वे कमान्डर को फॉलो करते ही हैं। उन्हें मानना ही होता है कि कमांडर का निर्णय ठीक ही होगा, हमें बस उसे फॉलो करना है। अगर एक-एक सैनिक कमान्डर से यह पूछने जाए कि आपने यह क्यों कहा ? आपको ऐसा निर्णय तो नहीं लेना चाहिए, ये ठीक नहीं है। तो, कमान्डर अपना काम ही नहीं कर सकेगा। फिर हार निश्चित ही है। खूब गहराई से विचारें कि – आज कमान्डर जितना भरोसा भी हमारे जीवन में गुरुजी के लिए हम दृढ़ कर पाए हैं क्या ? तो अब हम अपने जीवन की दिशा बदलें कि हमें कुछ समझ आए न आए, लेकिन–हम हमें मिले गुणातीत स्वरूप को फॉलो करें। **हमारी चेतना की प्रगति के लिए क्या जरुरी है, वह हम से ज्यादा वे जानते हैं।**

हम तो प्रभु को ढूंढने नहीं गए थे, पर उन्होंने कृपा करके हमें खुद ग्रहण किया... हमें अपनी गोद दी। अपने-अपने अंग के मुताबिक हमने उन्हें सखा माना, प्रियतम माना, सुख-दुःख के साथीदार माना, पिता स्वरूप में अपार वात्सल्य पाया, किसी भी प्रॉब्लम का हल चुटकी बजाते निकालें ऐसे प्रखर बुद्धिशाली माना। लेकिन भीतर में टटोलें कि सचमुच उन्हें प्रभुधारक संत माना क्या ? प्रभु का स्वरूप माना क्या ? सर्व कर्ता-हर्ता या नियंता माना ? दिव्य माना ?

खूब लाड़ लड़ा कर, अनेक स्मृतियाँ देकर खुद गरज रख कर उन्होंने हमारे साथ संबंध बनाया, लेकिन उनका ध्येय हम समझ नहीं सके। ऊपर से उनमें ही मनुष्यभाव रखा। जबकि वे तो हमें मानव में से महामानव की योनि में ले जाने निरंतर तत्पर हैं। उसी हेतु हमारे साथ हमारे जैसे बन कर उन्होंने कई कितने चरित्र भी करे।

माँ-बाप बालक को प्रेम देकर, लालच देकर, धमका कर एक झंखना-अपेक्षा के साथ ऐसा माहौल खड़ा करते कि वह अच्छा बने, उत्तम कक्षा को पाए, वारिसदार बने। लेकिन अबोध बालक की जड़ता, उसकी ज़िद्द, उसकी सीमित बुद्धि उसे माँ-बाप की इस भावना को समझने नहीं देती और ऊपर से वह लातें मारता है। धन्य हैं ऐसे माँ-बाप को जो लातें खाकर भी उसका जतन करना जारी ही रखते हैं।

ठीक उसी प्रकार हमारी आत्मा का जतन करने वाले प्रभु रूप संत हमें मिले हैं, पर उनकी हर एक क्रिया को हम अपने बौद्धिक मापदंडों से ही नापने रूपी लातें मारते रहे... लेकिन तब भी उन्होंने हमारे चैतन्य की परवरिश करनी छोड़ी नहीं है...

तो, **हे गुरुजी** !

आपकी हर क्रिया कल्याणकारी व चैतन्यलक्षी ही है–
आप हमें जो भी बात कहते हो वो वैसी ही है–
यह हम दिल की सच्चाई से मानने लगें,
उसमें शंका-आशंका करने हमारा मन
और
तर्क-वितर्क करने हमारी बुद्धि असमर्थ ही बन जाए,
थोड़ा भी अब अंतराय-दूरी आपसे ना रखें–
ऐसा निष्कपट वर्तें,
हम से और कुछ हो पाए या नहीं
स्वभाव-प्रकृति भी भले छूटें नहीं
पर **'करिष्ये वचनं तव'**
अर्थात्–अब तो आप जैसा कहें वैसा ही करा करें,
आपकी हाँ से हाँ और ना से ना, वही हमारा जीवन बने,
आपकी मर्जी में ऐसा वर्ते कि
आपको अपने गुण हमें देने का सहज मन हो जाए–
ऐसी **आपकी ६८वीं जन्म जयंती पर अभीप्सा...**

✡✡✡

होली—प्रेरणामूर्ति ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की जन्म जयंती !

अनादि महामुक्त भगतजी महाराज ने स्वरूपलक्षी यानि– मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी को ही जीवन का केन्द्रबिन्दु रख कर एक अजोड़ स्वरूपनिष्ठ सेवक का आदर्श सत्संग की पीढीयों के लिए रख दिया। उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि **अपनी देह और मन को गुरुचरणों में ऐसा सौंपा** कि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के कैसे भी चरित्र या वचन में मनुष्यभाव एवं मायिकभाव का संकल्पमात्र उठने ही नहीं दिया। **दिव्य विभूति का संपूर्ण दिव्यभाव से सेवन करके वे खुद दिव्य बन गए !**

यह बात निश्चित है कि **जो मुमुक्षु** अक्षर महामुक्त भगतजी महाराज के जीवनचरित्र के प्रसंगों का शुद्ध भाव से मनन-चिंतन करके स्वयं को मिले प्रत्यक्ष स्वरूप पर वो लगा कर दिल की सच्चाई से **आध्यात्मिक पथ पर चलने का निरंतर प्रयास करता रहे,** तो वह अवश्य शीघ्र ही **प्रभु की मूर्ति सिद्ध कर लेगा।**

हम सब भी देहभाव को गिने बिना प्रत्यक्ष स्वरूप में खुद को विलीन कर दें ऐसी इस होली के मंगलकारी दिन पर अभ्यर्थना !

✡✡✡

‘ब्रह्मज्योति’ का प्राणदुलारा-वंदन तुमको हमारा...

26 मार्च धुलेण्डी...

अनंत जीवों के कल्याण के लिए गुरुवर्य योगीजी महाराज जिसे अपने साथ ‘**भागीदार**’ के रूप में धरा पर लाए–

गुणातीत समाज के ‘**युवकों के लाड़ले नेता**’ व जीवन प्राण ऐसे **प.पू. साहेब** की जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि वंदन...

प.पू. काकाजी महाराज की परावाणी की शायद ही कोई कैसेट होगी जिसमें उन्होंने प.पू. साहेब को ‘**ठहरावरहित गुरुमुखी**’ कह कर याद ना किया हो। प.पू. साहेब के बचपन का एक छोटा-सा प्रसंग ही उनके ‘ठहरावरहित गुरुमुखी’ होने का सहज एहसास कराता है...

प.पू. साहेब तेरह-चौदह वर्ष के ही थे, तब से प.पू. बापा ने उन्हें अपनी दृष्टि में ले लिया था।

प.पू. बापा एक बार ‘सोखड़ा’ आए हुए थे। उस समय मकरसंक्रांति के दिन नज़दीक थे। प.पू. साहेब को पतंग उड़ाने का खूब शौक था। सो, प.पू. बापा के दर्शन-समागम के बजाय वे पतंगबाजी में तीन दिन व्यस्त रहे। प.पू. बापा ने उन्हें याद करके विशेष रूप से बुलवाया और पूछा कि तीन दिन क्यों दिखाई नहीं पड़े ? प.पू. साहेब ने निखालस मन से बात जैसी थी, वैसी बताई कि– ***‘मुझे पतंग उड़ाने का बहुत शौक है, सो पतंग उड़ाने चला जाता था।’*** साक्षात् पुरुष प.पू. बापा तो अपने इस चैतन्य के दिव्य तेज व भावि को जानते थे।

प.पू. बापा ने तुरंत जल मंगाया और प.पू. साहेब को हाथ में जल देकर कहा कि– ***‘तुम संकल्प करो कि*** *अब से पतंग नहीं उड़ाऊँगा...’*

छोटी-सी आयु के इस युवक ने तो गुरु आज्ञा शिरोधार्य करते हुए उस दिन से अपना प्यारा शौक यानि–पतंग उड़ाना छोड़ दिया। हम सोचें कि प.पू. बापा ने इस युवक पर अपना कैसा विशेष हकदावा रखा होगा और तभी तो अपनी भव्य योजना के लिए भी उन्हें पसंद किया।

कहा जाता है कि पुत्र के लक्षण पालने में से ही पता चलने लगते हैं। ठीक उसी तरह बचपन से ही प.पू. बापा को अंतर्यामी मान कर, भगवान का स्वरूप मान कर प.पू. साहेब पल-पल जीए हैं। वाकई प.पू. साहेब अनादि का ही स्वरूप हैं।

प.पू. बापा का यथार्थ स्वरूप प.पू. साहेब ने पहचाना और गुरु की दिली प्रसन्नता प्राप्त कर साथी-मित्रों के सहृदयी बन कर जिए। सब में अद्भुत माहात्म्य का सिंचन किया। ***प.पू. पप्पाजी के शब्दों में– आध्यात्मिकता में कोन्कर्ड प्लेन का पायलेट बन कर आज अनेकों के जीवन सारथी बन कर मोक्ष के दाता बने हैं...***

अमेरिका के ‘श्री स्वामिनारायण स्पिरिच्युअल एण्ड क्लचरल सेन्टर’ के मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा के अवसर पर प्रकाशित प.पू. साहेब द्वारा हुए भक्तों के अनुभवों की पुस्तक ‘**साहेबनो संग अनुपम रंग**’ द्वारा प.पू. साहेब की प्रभुधारक शक्ति, कल्याणकारी गुणों, अद्भुत व्यक्तित्व, निःस्वार्थ-निरपेक्ष प्रेम, पराभक्ति का सम्यक् दर्शन होता है।

फारसी में ‘**साहेब**’ शब्द का अर्थ ‘**मालिक**’ बनता है। परमेश्वर के लिए यह शब्द बोला जाता है; जैसे कि

'सबका मालिक एक' ! प.पू. साहेब आज प्रभु के दूत बन कर अनेक चैतन्यों के हृदय के 'मालिक' बने हैं...

सबसे अधिक आनंद की बात–सोने पे सुहागा कि अब की बार उत्तर भारत के मुक्तों को **27 मार्च, रविवार** के दिन प.पू. गुरुजी की जयंती के साथ-साथ **प.पू. साहेब की ६५वीं जन्म जयंती** मनाने का दिव्य मौका प्राप्त हुआ है। हम सभी को प.पू. साहेब के दर्शन, सेवा, समागम व आशीर्वाद का अमूल्य लाभ मिलेगा।

आइए, हम सब मिल कर प.पू. साहेब के चरणों में प्रार्थना करें कि हे साहेब ! गुरु की छोटी से छोटी आज्ञा पाल कर उन्हें राजी करने का कसब-करामात आपने स्वयं जीकर जो सिखाई है... अब तनिक भी समय गँवाए बिना वो लेकर हम जीने लग पड़ें और प्रत्यक्ष स्वरूप की प्रसन्नता के पात्र बन पाएं–ऐसे आशीर्वाद देना।

✡✡✡

18 अप्रैल... रामनवमी श्रीजी महाराज की जयंती !

भगवान स्वामिनारायण ने पृथ्वी पर मानवस्वरूप में आकर पशु जैसी व्यक्तियों को जीवनमुक्त बनाया और काम, क्रोध, लोभ, मान, ईर्ष्या, स्वाद वगैरह मूलवृत्तियों को जड़ से उखाड़ कर जीव को ब्रह्मरूप करके भगवान का अखंड दिव्य सुख प्राप्त करने का राजमार्ग गुणातीत पुरुषों द्वारा खुल्ला रख दिया।

यह वर्ष 'ऐतिहासिक' है, जब–

❋ **श्रीजी महाराज को गढडा आए 19 फरवरी – महा शुक्ला एकादशी को 200 वर्ष पूरे हुए हैं...** गढडा यानि श्रीजी महाराज का प्रिय व निवास स्थान ! श्रीजी महाराज लगातार तीस वर्षों तक भक्तराज दादाखाचर, जीवुबा-लाडुबा आदि भक्तों की भक्ति के आधीन होकर गढडा में रहे। धन्य-धन्य गढडा की पावन भूमि जिसे साक्षात् प्रभु ने पसंद किया और वहाँ के भक्तों की अनुपम सेवा-भक्ति-भावना को !

और...

❋ **ब्रह्मस्वरूप श्री कृष्णजी अदा की आज्ञा से ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज चार-पाँच संतों के साथ 'वड़ताल' छोड़ कर श्री अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना के प्रवर्तन के लिए बाहर निकले, उसे इस वर्ष 100 वर्ष पूरे हुए हैं।** अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना के ध्वज देश-परदेश में लहरा रहे हैं।

पर, केवल श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की जय बुलाने मात्र से हम गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का ऋण नहीं चुका पाएंगे। हमें मिले अक्षरपुरुषोत्तम के प्रत्यक्ष स्वरूप का मन, कर्म, वचन से सेवन करके उसके अखंड धारक बनें वही गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज को सच में पहचाना कहा जाए। तो आइए, शुद्ध उपासना दृढ़ करके प्रत्यक्ष स्वरूप में अचल निष्ठा रख कर जीवन धन्य बनाएं और श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना प्रवर्तन शताब्दी मनाएं !

परम पूज्य काकाजी महाराज शुरुआत से **'श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका'** में **'सद्विचार'** के अतंर्गत खूब मननीय मार्मिक रहस्य की बात खोल कर साफ़-साफ़ उजागर करते थे, जो आज हमें एक दिशा देती है।

1972 में श्रीजी महाराज की जयंती निमित्त परम पूज्य काकाजी महाराज द्वारा लिखवाया गया 'सद्विचार' हमारे प्रश्न का हल स्पष्ट कर जाता है।

हमें कई बार प्रश्न उठता है कि ऐसे पहुँचे हुए संत मिलने के बाद भी हम दुःखी क्यों रहते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर निहारें–

भगवान मिले, भगवान जैसे साधु मिले, उनका प्रसंग भी करते हैं; तब भी अखंड सुख क्यों नहीं आता ? तो श्रीजी महाराज ने कहा कि आप हमारा प्रसंग तो करते हो, पर आधा हमारा करते हो और आधा 'जगत' का करते हो। वह क्या ? तो, ***प.पू. काकाजी महाराज*** समझाते हैं –

मन, बुद्धि, चित्त में 'जगत' रहा हुआ है। जहाँ मन और बुद्धि हैं वहाँ संशय है। संशय है वहाँ द्वंद्व है और जहाँ द्वंद्व है वहाँ उलझन और दुःख रहेगा ही। इसलिए सुख के सिंधु ऐसे भगवान मिलने के बावजूद भी 'मन और बुद्धि का संगी' दुःख मिश्रित सुख भोगेगा।

हमें सिर्फ नीरव सुख चाहिए। सो, हर चीज को मन से परे के प्रदेश में से पा लेने का सीख लेना–वह है हमारी साधना।

अनुभूति वाले एकांतिक संत के प्रसंग से यह करामात सीख कर, केवल भगवान के होकर, उनके ढंग से भगवान के आधीन रह कर भगवान के बल से ही हम अखंड सुखी रहते हो जाएं यही पुरुषोत्तमनारायण के इस प्रागट्य दिन पर अभीप्सा !

4 मई... 'भजन-स्वाध्याय' की प्रेरणामूर्ति प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयंती !

दो हजार नौ में प.पू. स्वामिजी का **'अमृत महोत्सव'** मनाने के नगारे बज चुके हैं। हम सब के जीवन का स्वर्ण मौका... अब से करीब चार साढ़े चार साल का समय हमें मिला है।

प.पू. स्वामिजी जब से गुरुहरि योगीजी महाराज के संपर्क में आए, तब से 'भक्त्या अनुवृत्त्या' करके बापा के दिव्य मानस पुत्र बन गए ! शुरुआत से ही प.पू. बापा को निहारने की उनकी दृष्टि निराली ही थी।

प्रभु का कार्य करने आए ऐसे संतों को गुण पाने नहीं होते, बल्कि अक्षरधाम से ही वे साथ लेकर आते हैं। तब भी सभी के लिए एक आदर्श रखने उन्होंने बापा का ऐसा सेवन किया कि आज वे स्वयं अनेकों को मूर्ति का सुख दे रहे हैं। देश-विदेश में विचरण करके उनकी लाक्षणिक अदा और शैली में अमर गुणातीत भावना का सिद्धांत समझा कर श्री अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना की प्रगट की निष्ठा प्रर्वता रहे हैं... यूं मुमुक्षुओं की चेतना में श्रद्धा जाग्रत करके उनके जन्म-मरण के चक्कर की पूर्णाहुति कराने निरंतर प्रयत्नशील हैं।

संतों, बहनों, सहिष्णु युवकों, अंबरिषों का एकनिष्ठ अद्भुत समाज का सर्जन ही प.पू. स्वामिजी की बहुमुखी प्रतिभा का सम्यक् दर्शन करा देता है। इनके द्वारा ही हजारों परिवारों में दिव्यता और आत्मीयता का साम्राज्य स्थापित करने का भगीरथ कार्य प.पू. स्वामिजी कर रहे हैं। उनके द्वारा सर्जित यह आत्मीय समाज भी शत-शत वंदनीय है। ***जगत के अंटशंट बोलने-करने पर, अख़बारों-पत्रिकाओं में कुछ भी छप जाने पर इस समाज की निष्ठा टस से मस नहीं हुई है, इसी से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि सब के दिलों में प.पू. स्वामिजी ने कैसी दिव्य अनुभूतियाँ कराई होंगी !***

हमारी साधना अत्यधिक आसान बनाने गुणातीत पुरुष स्वयं का दृष्टांत देकर हमें समझाते हैं... वो उनकी कैसी उच्च व उदार भावना... प.पू. स्वामिजी एक बार गोष्टि में बोले कि –

'मैं सब जगह बुद्धि लगाता था, पर बापा के पास कभी भी बुद्धि नहीं लगाई। बुद्धि ज़रा भी तर्क-वितर्क करने जाए तो अक्षरदेरी में जाकर भजन-स्वाध्याय करने बैठ जाता। मेरे जीवन की एक ही साधना मैंने रखी थी; बस योगीजी महाराज का हँसता मुखारविंद देखता रहता-उनकी लीला का दर्शन करता रहता–जहाँ केवल ब्रह्मभाव ही दिखाई पड़ता।'

प.पू. स्वामिजी स्वाध्याय-भजन का गहरा अर्थ समझाते हुए बताते हैं कि –

– ***स्वाध्याय व भजन हमारा-साधक का प्राण है।***
– ***सिर्फ स्वाध्याय करने से बुद्धि का विकास होगा, पर यदि साथ में भजन करेंगे तो एक 'दिल' यानि– भावना प्रगटेगी, बल मिलेगा, प्रभु की शक्ति प्रगट हो जाएगी।***
– ***सच्चा स्वाध्याय यानि– विचार, वाणी और वर्तन में एकरूपता।***
– ***स्वाध्याय-भजन में आलस, प्रमाद का स्थान तनिक भी नहीं होना चाहिए।***
– ***आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए पहला कदम यानि– स्वाध्याय, खुद का ही दोष देख कर भजन करना।***

सो, कोई भी प्रसंग बने तब हम स्वाध्याय-भजन का ही उपाय लें, यही प.पू. स्वामिजी व सभी गुणातीत स्वरूपों का निरंतर आग्रह है।

एक बार 'अंबरीष शिविर' में मान के भयंकर दोष पर प्रकाश डालते हुए प.पू. स्वामिजी अपनी परावाणी में बोले – ***भयंकर मान को पहचानना, स्व-सारप यानि– अच्छाईपेशी की बुरी आदत को पहचानना। चिंता एक ही बात की करना कि मान के कारण किसी का सुनें, बोले, संकल्प उठे, मेरा-तेरा, किसी की टीका-चर्चा, निंदा करी तो वह 'पाप' भगवान कभी माफ नहीं करते। सिर्फ 'संबंध' देखना उससे बड़ा कोई 'पुण्य' नहीं है।***

सो, अब केवल गुणगान गाकर हम बैठे ना रहें। नियमित रूप से हमारा स्वाध्याय-भजन करना परम पूज्य स्वामिजी को खूब प्रिय है। उनकी हर कथावार्ता में हमने यह अवश्य सुना ही है। तो, अब प.पू. स्वामिजी की जयंती पर ऐसा संकल्प करके कटिबद्ध हों कि कैसे भी संजोगों में समय निकाल कर हम **'स्वाध्याय-भजन'** को **'ऑक्सीजन'** जैसा अनिवार्य जान कर वह नियमित रूप से करें ही और 'अमृत महोत्सव' तक में सच्चे अर्थ में अपना जीवन अमृतमय बनाएं–ऐसे आशीर्वाद की प.पू. स्वामिजी के श्री चरणों में प्रार्थना !

✡✡✡

निमंत्रण

जय स्वामिनारायण !

गुरुवर्य योगीजी महाराज द्वारा बार-बार कथित

एवं

निमंत्रण कार्ड पर चित्रित

'उमंगभरी जी हजूरी' की बोध कथा रहस्य लिए हुए है...

आइए–

इसी राह पर भक्ति अदा करने

प्रगट ब्रह्मस्वरूप **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** की निश्रा में

एवं

ब्रह्मस्वरूप **प.पू. काकाजी महाराज** के मानसपुत्र

पू. भरतभाई, पू. वशीभाई आदि योगेश्वरों के सान्निध्य में

हमारे आत्मीय स्वजन लोकप्रिय गायक **श्री महेन्द्र कपूरजी** एवं **श्री रोहन कपूर** के संग

27 मार्च 2005, रविवार की सायं 4:30 से 9:00

उत्तर भारत के मुक्तों के पितास्वरूप कहो,

सखास्वरूप कहो, दिलबर कहो, राहबर कहो

जिस रूप में भी निहारें ऐसे–

परम पूज्य गुरुजी की 68 वीं

एवं

हमारे अनुपम मिशन की 'ब्रह्मज्योति' के अधिष्ठाता व प्राणपुरुष

परम पूज्य साहेब की 65 वीं

जन्म जयंती मनाने सपरिवार ईष्ट मित्रमंडल सहित

सेवा, भजन-कीर्तन एवं संत समागम से उन्हें राजी करने 'उमंगभरी जी हजूरी' करें।

– गुणातीत कुनबा, दिल्ली

भजन

(राग - दूल्हे का सेहरा सुहाना लगता है....)

गुरुआज्ञा ही बस बना तेरा जीवन, काकाजी से संबंध वो दौलत तेरी है,
जहां में हो रोशन काकाजी की शोहरत, भक्तों की भक्ति इबादत तेरी है...

काकाजी को साक्षात् प्रगटाया है,
अमर काकाजी को तुमने तो किया है।
कोहिनूर अनमोल काकाजी का है तू,
उनका ही पैग़ाम तूने फैलाया है।
काकाजी को........

साधुता का चिदाकाश तू परम भागवत संत,
चेतना के दाग़ मिटाने, कला करे तू अनंत,
गुरु अभिप्राय का चिंतन, गुरुमूर्ति का ही मनन,
अनोखी तेरी गुरुभक्ति को कोटि - कोटि वंदन,
वंदन-वंदन, कोटि वंदन,
वंदन-वंदन, कोटि वंदन,
वंदन...... तुम्हें वंदन.... वंदन...... कोटि वंदन....
वंदन...... तुम्हें वंदन.... वंदन...... कोटि वंदन....
वंदन.... वंदन.... वंदन.... वंदन....
वंदन, वंदन, वंदन, वंदन, वंदन, तुम्हें वंदन.... कोटि वंदन,

ब्रह्मानंद और ब्रह्माज्ञान ही लुटाया है,
एकांतिक हमें करने धरा पर आया है,
कोहिनूर अनमोल काकाजी का है तू,
उनका ही पैग़ाम तूने फैलाया है
काकाजी को.....

जीवों को, सुखी करना ही, तेरा एकमात्र उद्यम,
भक्तों की रक्षा, हेतु बदले, प्रकृति के भी नियम,
एक हो, हमारा विचार, वाणी और वर्तन,
निराकार कर दो हमको हे साकार भगवन्,
मुक्तों में जो तुमको निहार पाया है,
उसके लिए परम सुखदाई माया है,
कोहिनूर अनमोल काकाजी का है तू,
उनका ही पैग़ाम तूने फैलाया है....

Statement about ownership and other particulars about newspaper

‘भगवत् कृपा’

(Form IV Rule 8)

1.	*Place of Publication*	: Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2.	*Periodicity of its Publication*	: Bi-Monthly
3.	*Printer's Name*	: Prabhaker Rao
4.	*Nationality*	: Indian
	Address	: 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi -52
5.	*Publisher's Name*	:
	Nationality	: As above
	Address	:
6.	*Editor's Name*	:
	Nationality	: As above
	Address	:
7.	*Owner's Name*	: Yogi Divine Society
	Nationality	: Indian
	Address	: 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

PRABHAKER RAO

Date: 15 March, 2005

Signature of Publisher

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	21.3.2005,	सोमवार	– एकादशी, व्रत
(2)	दि.	25.3.2005,	शुक्रवार	– होली, ब्र. स्व. भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन
(3)	दि.	26.3.2005,	शनिवार	– धुलेण्डी, प्र.ब्र.स्व.प.पू. साहेब की जन्म जयंती
(4)	**दि.**	**27.3.2005,**	**रविवार**	**– दिल्ली मंदिर में प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी की जन्म जयंती मनाएंगे। (सायं 4:30 से 9:00)**
(5)	दि.	5.4.2005,	मंगलवार	– एकादशी, व्रत
(6)	दि.	18.4.2005,	सोमवार	– रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
(7)	दि.	20.4.2005,	बुधवार	– एकादशी, व्रत
(8)	दि.	22.4.2005,	शुक्रवार	– गुरुहरि योगीजी महाराज का दीक्षा दिन
(9)	दि.	4.5.2005,	बुधवार	– **प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्म जयंती** एकादशी, व्रत
(10)	दि.	11.5.2005,	बुधवार	– अखात्रीज
(11)	दि.	12.5.2005,	गुरुवार	– गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि

R.N.I. 28971/ 77

To

Air Mail

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine

Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :—

Printer, Publisher, Editor :—

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,

Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327

Printed at : **Delux Offset Printers**

308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi